राम की शक्तिपूजा – शक्ति संरचना का सच

डॉ. वीरेन्द्र सिंह
अतिथि प्रवक्ता,
स्वामी श्रद्धानंद कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

राम की शक्तिपूजा निराला की काव्य प्रतिभा का तीव्रतम विस्फोट है। यह कविता एक साथ पुराण, इतिहास, धर्म, संस्कृति, मिथक, स्वप्न, यथार्थ, परम्परा और आधुनिकता को इस तरह अपने में समेटे हुए हैं कि इनको अलगाया नहीं जा सकता। कोई भी रचना अपने आप में बन्ध पाठ होती है संदर्भ ही उसे अर्थवत्ता प्रदान करते हैं। हिन्दी आलोचना में राम की शक्तिपूजा को भिन्न–भिन्न सन्दर्भों से विश्लेषित किया जाता रहा है। परन्तु इस कविता को आज तक तीन सन्दर्भों में ही देखा गया। डॉ. शिवकुमार मिश्र ने समूची कविता को तीन आयामों में समाहित करते हुए कहा है कि ''यह कविता जैसा कि हम कह चुके हैं, तीन आयामों पर अपने को संचरित करती है। एक आयाम निराला के व्यक्तिगत जीवन–संदर्भों का है, दूसरा युग–सन्दर्भों का अर्थात् एक पराधीन राष्ट्र के, पराधीनता से मुक्ति के लिए छेड़े गए संग्राम का और तीसरा मिथक का, अर्थात् रावण द्वारा अपहृत सीता की मुक्ति के लिए रावण के विरुद्ध चलाए गए राम के अभियान का और तीनों आयामों पर यह कविता अपने में संपूर्ण हैं, संपुजित हैं, संपुष्ट है।''[1]

डॉ. शिवकुमार मिश्र को पक्का विश्वास है यह कि यह कविता इन तीनों आयामों में सम्पूर्ण है। मतलब इन तीन चाबीयों से ही इस कविता को खोला जा सकता है। यह बड़ा ही खेद का विषय है कि हिन्दी आलोचना इस कविता को इन तीन सन्दर्भों से बाहर नहीं निकाल सकी। मेरे इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य है इन सन्दर्भों या दृष्टियों की मीमांसा करते हुए उनकी शक्ति

[1] निराला का कालजयी व्यक्तित्व – सं. समय सिंह, पृ. 137.

और सीमाओं का मूल्यांकन कर नये संदर्भ का संधान करना।

अधिकतर आलोचकों ने इस कविता को निराला के व्यक्तिगत जीवन का प्रतिबिम्ब माना है। समूची कविता में राम का जो संघर्ष, पीड़ा, निराशा और पराजय–बोध है वह वस्तुतः निराला के जीवन का यथार्थ है। निराला साहित्य के गंभीर समीक्षक माने जाने वाले डॉ. रामविलास शर्मा का मानना है कि ''धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध'' यह पंक्ति पूरी कविता का सूत्र है। कहना न होगा कि यह पंक्ति स्वयं कवि के जीवन पर खूब घटित होती है। राक्षस, वानर, लंका, समुद्र–तट, यह सब एक विशाल सेटिंग मात्र है; वास्तविक संघर्ष राम के हृदय में है। वह शक्ति की साधना कर रहे हैं और प्रश्न है कि वह विजयी होंगे या नहीं। 'तुलसीदास' में कवि एक हद तक तटस्थ है; 'राम की शक्ति–पूजा' पर कवि की अपने व्यक्तित्व की छाप है।''[2] लेकिन यहाँ प्रश्न यह उठता है कि जब निराला को अपने ही जीवन की कथा कहनी थी तो उन्होंने मिथकीय कथा का चयन क्यों किया? राम की शक्ति–पूजा से पहले वे 'सरोज–स्मृति' में अपने व्यक्तिगत जीवन का समूचा विवरण दे चुके थे। दूसरी बात यह कि इस कविता में राम के अतिरिक्त जो पात्र हैं क्या वे केवल सेटिंग मात्र हैं। कहना न होगा कि इस कविता की समूची आलोचना राम, निराला और युग तक सिमट कर रह गई है।

इस कविता के दूसरे ऐसे ही आलोचक हैं डॉ. बच्चन सिंह जिन्होंने अपने इतिहास ग्रंथ 'हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास में कहा है ''आर्थिक, गार्हस्थिक, सामाजिक, साहित्यिक युद्ध में पराजित निराला अपनी मनोदशा को बदलने और पराजय के बोझ को फेंकने के लिए नये मार्ग का अन्वेषण कर रहे थे। वास्तविकता तो यह थी कि 'एक और मन रहा राम का जो न

2 निराला – डॉ. रामविलास शर्मा, पृ. 110.

थका।' वे नये सिरे से एक और युद्ध करना चाहते थे। इसके लिए उन्हें 'राम की शक्तिपूजा' का 'ऑब्जेक्टिव कोरिलेटिव' मिल गया।''[3]

इनका मानना है कि इस कविता के माध्यम से निराला अपनी व्यक्तिगत हार, निराशा और पराजय को जीत में बदलना चाहते हैं। यह काम उन्होंने राम द्वारा शक्ति की पूजा कराके किया। मतलब इस कविता का युद्ध केवल राम और रावण का युद्ध नहीं है अपितु स्वयं निराला का दयनीय एवं निराशाजनक जीवगत परिस्थितियों से है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि युद्ध इस कविता का मूल विषय है लेकिन यह युद्ध एक ओर जहाँ बाहर दुनिया में रावण और राम के बीच हैं दूसरी ओर राम के मन में भी है। राम के मन का युद्ध जीत और हार के संशय को लेकर है। राम के मन में संशय ही नहीं है अपितु रावण की शक्ति और सामर्थ्य को लेकर डर और बेचैनी भी है। प्रश्न यह उठता है कि राम इतने डरे हुए क्यों हैं? राम की शक्तिपूजा के राम कौन है? यह तुलसीदास के राम तो कदापि नहीं हो सकते क्योंकि तुलसी के राम के सामने खड़ा होने का हौंसला किसी में भी नहीं है। तुलसी के राम में आक्रामकता है। इस समूची व्याख्या के तीन बिन्दू हैं राम की शक्तिपूजा में राम कौन है? और शक्ति की पूजा का अर्थ क्या है?

अधिकतर आलोचकों ने राम को प्रतीक माना है। निराला के राम में संशय है और यह संशय अपने लक्ष्य की प्राप्ति को लेकर है। डॉ. नंदकिशोर नवल यह मानते हैं कि निराला के राम में आज के मध्यवर्ग के लक्षण दिखाई देते है। डॉ. नंदकिशोर नवल के शब्दों में ''राम इस कविता में निश्चय ही बहुत ही निरूपाय, संशयग्रस्त और निराश रूप से हमारे सामने आते हैं;

[3] हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास – डॉ. बच्चन सिंह, पृ. 352.

जो आधुनिक मध्यवर्गीय व्यक्ति का लक्षण है, लेकिन इन सभी रूपों में राम बने रहते हैं। निराला की कला इसी बात में है। जैसे राम को अपनी विजय को लेकर शंका है, वैसे ही आज के प्रत्येक मध्यवर्गीय व्यक्ति इस बात से परेशान है कि वह अपने जिस लक्ष्य की तरफ बढ़ना चाहता है, वह उसे प्राप्त होगा कि नहीं।''[4]

निराला के राम को मध्यवर्गीय व्यक्ति का प्रतीक मानना उसके साथ अन्याय करना है। भारत के मध्यवर्ग का द्वन्द्व स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान जीत या हार को लेकर नहीं था अपितु वह इस लड़ाई में किसका साथ दे इसको लेकर था। निराला के राम इस बात को लेकर चिंतित हैं कि वह रावण से लड़े कैसे? क्योंकि रावण की शक्ति के सामने वे अपने आप को दुर्बल, लघु और हारा हुआ मान रहे हैं? निराला ने राम की मनःस्थिति को इन पंक्तियों में इंगित किया है –

'स्थिर राधवेन्द्र को हिला रहा फिर–फिर संशय,
रह–रह उठता जग जीवन में रावण–जय–भय,
जो नहीं हुआ आज तक हृदय रिपु–दम्य–श्रान्त,
एक भी, अयुत–लक्ष में रहा जो दुराक्रान्त,
कल लड़ने को हो रहा विकल वह बार–बार
असमर्थ मानता मन उद्यत हो हार–हार।[5]

राम को रावण के आतंक का भय सता रहा है। जो राम आज तक किसी के सामने भयभीत नहीं हुआ। आज वह अपनी हार मान रहा है। यहाँ रावण कौन है? निश्चित रूप से यह रामचरितमानस का रावण नहीं है। दूधनाथ सिंह को निराला के राम वाल्मीकि के राम के करीब

4 निराला–काव्य की छवियाँ – नंदकिशोर नवल, पृ. 92.
5 राग–विराग – निराला सं. – डॉ. रामविलास शर्मा, पृ. 94.

लगते हैं। दूधनाथ सिंह के मतानुसार ''निराला के राम इन अर्थों में वाल्मीकि राम के अधिक निकट लगते हैं, क्योंकि रावण के विनाश की मुख्य प्रेरणा इन दोनों जगहों पर सीता ही है। जबकि 'रामचरित मानस' में सीता तो मात्र निमित्त है, रावण का विनाश तो पूर्व–निश्चित है।''[6]

डॉ. नंदकिशोर नवल को भी यही लगता है कि राम की शक्ति–पूजा में राम और रावण के युद्ध का मूल निमित्त सीता ही है। सारा युद्ध सीता की प्राप्ति के लिए ही लड़ा जा रहा है। डॉ. नंदकिशोर नवल के शब्दों में ''सच्चाई यह है कि यह कविता वैसे ही पत्नी–प्रेम की कविता है, जैसे 'सरोज–स्मृति' पुत्री–प्रेम की कविता। इस कविता के केन्द्र में सीता है, सीता की मुक्ति, जिसका पता उसकी संरचना पर ध्यान देने से चलता है।''[7]

अगर यह कविता पत्नी प्रेम की कविता है फिर तो यह आधुनिक युग की रचना न होकर आदिकाल की रचना है। आदिकालीन काव्य में ही 'स्त्री' युद्ध का केन्द्र होती थी सामन्ती मनोवृत्ति का प्रतिनिधि निराला कैसे कर सकते है? दूधनाथ सिंह ने इस कविता के संदर्भ में अपनी कुछ नयी स्थापनाएँ प्रस्तुत की हैं जिसकी तरफ आलोचकों का ध्यान गया है। दूधनाथ सिंह का मानना है कि ''कहीं–कहीं इस कविता में राम के माध्यम से निराला के राष्ट्रीय गुलामी से मुक्ति की चिन्ता झलक मारती है। इस नये अर्थ की प्रतिष्ठा की ओर कुछ लोगों ने संकेत भी किया है। इसकी कुछ क्षीण और दूरवर्ती झंकार कविता में विद्यमान है। यद्यपि इस अर्थ को पूरी कविता में बहुत सावधानी से पिरोया नहीं गया है। एक स्थूल ढंग से राम की विजय और सीता की मुक्ति की चिन्ता को हम राष्ट्र–मुक्ति और मर्यादा की रक्षा के लिए युद्ध में नियोजित होने के

6 निराला : आत्महन्था आस्था – दूधनाथ सिंह, पृ. 108.

7 निराला : काव्य की छवियाँ – नंदकिशोर नवल, पृ. 94.

नैतिक पक्ष को कविता में से खींच सकते हैं''[8]

मतलब यह है कि यह सीता की मुक्ति की कविता नहीं है अपितु राष्ट्र मुक्ति का बिम्बात्मक आख्यान है। दूधनाथ सिंह को बराबर यह भी लगता है कि इस राष्ट्रीय मुक्ति के अर्थ को सही ढंग से लागू नहीं किया जा सकता। इसका अर्थ यह है कि राष्ट्रीय मुक्ति वाली बात अर्धसत्य है। दूधनाथ सिंह यह भी मानते हैं यह कविता अभिधा से नहीं समझी जा सकती अपितु इसके लिए प्रतीकार्थ का सहारा लेना आवश्यक है। लेकिन उनका मानना है कि यह प्रतीकार्थ कविता में जगह–जगह बाधित हो जाता है। दूधनाथ सिंह के शब्दो में ''पूरी कविता में प्रतीकार्थ बहुत सचेत और सघन ढंग से नियोजित नहीं है। उसमें शब्द–बन्ध की उड़ान आड़े आती है और इस प्रतीकार्थ को जगह–जगह बाधित करती है। शब्द–बन्ध के खलखलाते–प्रवाह की मस्ती में निराला इस अर्थ को कविता में आदि से अन्त तक संगुम्फित करने में चुक गये हैं।''[9]

शब्द–बन्ध प्रतीकार्थ के रास्ते में अवरोध पैदा करते हैं। अब इस बात का निर्णय कैसे हो कि कविता में कहाँ प्रतीकार्थ है? और कहाँ अभिधार्थ। आलोचकों ने अपनी–अपनी सहुलियत के अनुसार प्रतीकार्थ और अभिधार्थ को फीट कर लिया। मतलब राम और शक्ति को प्रतीक माना बाकि सभी घटनाओं और पात्रों को अभिधार्थ के हवाले कर दिया। इस कविता के महत्वपूर्ण पात्र हनुमान को केवल और केवल अभिधा के माध्यम से समझा। मतलब तुलसी के हनुमान की तरह ही राम की शक्तिपूजा का हनुमान भी राम का सेवक है। उसका सारा पराक्रम, साहस और ताकत प्रभु श्रीराम के चरणों में समर्पित है। लेकिन राम की शक्तिपूजा के पाठ में हनुमान की शक्ति को देखा जाए तो कुछ अलग ही तथ्य निकलकर सामने आते है।

---

8 निराला : आत्महन्था आस्था – दूधनाथ सिंह, पृ. 109.

9 निराला : आत्महन्था आस्था – दूधनाथ सिंह, पृ. 111.

हनुमान जब राम को रोता हुआ देखते है तो हुंकार भरकर आकाश में गमन करने लगते हैं क्योंकि शक्ति का वास आकाश में ही है। शक्ति पर आक्रमण करने के लिए आकाश की तरफ बढ़ते हैं। शिव हनुमान की शक्ति को पहचानते हैं और वे शक्ति को सावधान करते हैं कि वह हनुमान पर आक्रमण ना करें नहीं तो स्वयं शक्ति की ही हार होगी।

चिर–ब्रह्माचार्य–रत, ये एकादश रूद्र धन्य
मर्यादा–पुरुषोत्तम के सर्वोत्तम, अनन्य,
लीला–सहचर, दिव्यभावधर, इन पर प्रहार,
करने पर होगी देवि, तुम्हारी विषम हार[10]

शिव से प्रेरणा शक्ति ने हनुमान की माँ अंजना का रूप धारण किया और बड़ी चतुराई से हनुकार को डाँटते हुए कहा तुम किसकी आज्ञा से यहाँ आए? तुम तो प्रभु श्रीराम के सेवक हो जो स्वयं शिव को पूजते हैं।

यह महाकाश, है जहाँ वास शिव का निर्मल
पूजते जिन्हें श्रीराम, उसे ग्रसने को चल
क्या नहीं कर रहे तुम अनर्थ – ? सोचो मन में
क्या दी आज्ञा ऐसी कुछ श्री रघुनन्दन ने?
तुम सेवक हो, छोड़ कर धर्म कर रहे कार्य –[11]

हनुमान के लिए तुम का सम्बोधन और राम के लिए श्रीराम और श्री रघुनन्दन। कविता की भाषा की बुनावट में हनुमान की हैसियत साफ दिखाई देती है। हनुमान कौन है? भारतीय समाज की जाति–व्यवस्था के सबसे निचले पायदान पर खड़ा आदिवासी और श्रमिक। राम कौन हैं?

10 राग–विराग – निराला सं. रामविलास शर्मा, पृ. 97.
11 वही।

इस उत्तर को स्वयं वाल्मीकि ने 'रामायण' के 'बालि–वध–प्रसंग' में राम के मुख से दिलवाया है। बालि जब राम से यह पूछते हैं कि राम ने उसे धोखे से क्यों मारा? तो राम कहते हैं ''मैं उत्तम कुल में उत्पन्न क्षत्रिय हूँ; अतः मैं तुम्हारे पाप को क्षमा नहीं कर सकता। जो पुरुष अपनी कन्या, बहिन अथवा छोटे भाई की स्त्री के पास काम–बुद्धि से जाता है उसका वध करना ही उसके लिए उपयुक्त दण्ड माना गया है।''[12]

मतलब समाज में क्या पुण्य है और क्या पाप है इसका निर्णय क्षत्रिय ही करेगा। क्षत्रिय ही परिवर्तन या क्रान्ति का अगुवा होगा। यही वर्ण–व्यवस्था है और यही शक्ति की संरचना का सच है। जब बालि कहता है कि ''मैं सदा फल–फूल का भोजन करने वाला और वन में विचरने वाला वानर हूँ। मैं आपसे युद्ध नहीं करता था, दूसरे के साथ मेरी लड़ाई हो रही थी। फिर बिना अपराध के आपने मुझे क्यों मारा।''[13]

इसके उत्तर में राम कहता है कि समूची पृथ्वी पर अपराधी को दण्ड देने का अधिकार क्षत्रिय का है क्योंकि समूचे भूखंड पर उन्हीं का आधिपत्य है। राम के शब्दों में ''पर्वत, वन ओर काननों से युक्त यह सारी पृथ्वी इक्ष्वाकुवंशी राजाओं की है, अतएव यहाँ वे पशु–पक्षी और मनुष्यों पर दया करने और उन्हें दण्ड देने के अधिकारी है।''[14]

अब आप समझ लीजिए राम जैसे क्षत्रिय के सामने हनुमान जैसे आदिवासी या वानर की क्या स्थिति होगी। हनुमान शक्ति को वश में कर सकते थे लेकिन जानबूझकर निराला ने उन्हें ऐसा करने से रोका। क्योंकि यदि हनुमान शक्ति को पराजित कर लेते तो वर्णवादी व्यवस्था का

12 भाषा, साहित्य और संस्कृति – सं. विमलेश कांति वर्मा, पृ. 136.
13 वही, पृ. 134.
14 वही, पृ. 135.

क्रम उलट जाता। हनुमान जैसे वानर, भालू, रीछ जैसे हाशिये के लोग क्रान्ति के अगुवा बन जाते। हनुमान को लेकर विद्वानों ने बड़े विचित्र तर्क गढ़े हैं। आखिर निराला ने हनुमान को क्यों रोका? इसका उत्तर देते हुए डॉ. शंभुनाथ सिंह कहते है कि शक्ति को पराजित करने का हनुमान का रास्ता ठीक नहीं था। वह आक्रामक एवं उग्रपंथी होकर शक्ति को वश में करना चाहता था। डॉ. शंभुनाथ सिंह के शब्दों में ''हनुमान को ऐतिहासिक परिस्थितियों का वह ज्ञान न था, जो राम को था। राम समझ गये कि कुशल साम्राज्यवादी रावण से लड़ने के लिए परंपरागत औजार व्यर्थ हैं, क्योंकि रावण शक्ति के ही एक रूप श्यामा के सहयोग से अधुनातन क्षमताओं के साथ लड़ रहा है और बड़ा ही कुशल है। हनुमान परिस्थिति को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में नहीं देख पाता। राम के दुख–नैराशय से सिर्फ उद्वेलित होकर वह अति वामपंथी रास्ते की तरफ बढ़ता है।''[15]

शंभुनाथ सिंह वस्तुतः यह कहना चाहते हैं कि हाशिये के लोग वस्तुतः पिछड़े एवं अज्ञानी होते हैं उनमें इतिहास–बोध नहीं होता वे केवल उच्च जाति में उत्पन्न व्यक्तियों का नेतृत्व स्वीकार करने के लिए बाध्य हैं हाँ वे सेतु बनाने के लिए रात–दिन मेहनत कर सकते हैं जटायु बनकर सीता को बचाने के लिए अपने पंख कटवा सकते हैं। हनुमान को लेकर हिन्दी के आलोचकों के मत लगभग समान है। दूसरा मत दूधनाथ सिंह का है। दूधनाथ सिंह का मानना है कि कविता के प्रसंग में हनुमान का संदर्भ प्रतीकार्थ से नहीं जुड़ता क्योंकि हनुमान केवल बल का उत्तेजित प्रदर्शन कर रहे हैं। हनुमान विध्वंस और विनाश करने वाले हैं। दूधनाथ सिंह के शब्दों में ''जैसे हनुमान का प्रसंग ठीक ढंग से प्रतीकार्थ में जुड़ता नहीं लगता। वह उत्तेजित बल–प्रदर्शन का उदाहरण अलग लगता है। कुछ–कुछ परम्परित पाठक को चमत्कृत करने

[15] मिथक और आधुनिक कविता – शंभुनाथ सिंह, पृ. 158.

वाला। उनके प्रदर्शन से विजय की सम्भावना कम और प्रलय की सम्भावना अधिक बढ़ जाती है। इसीलिए उन्हें रोका जाता है। क्योंकि राम सिर्फ मर्यादित विजय चाहते हैं – मुक्ति चाहते हैं, सर्वग्रासी विनाश नहीं।''[16]

दूधनाथ सिंह का मानना है कि हनुमान को इसलिए रोका गया कि वह विनाश कर देता। राम को मर्यादित विजय चाहिए। क्या जीत मर्यादित हो सकती है? राम इस मर्यादा को निभाने के लिए युद्ध को छोड़कर एकान्त में शक्ति की पूजा करने बैठ जाते हैं। राम के लिए शक्ति कहीं बाहर नहीं है अपितु मन में ही स्थित है। शक्ति भीतर सोयी हुई हैं उसे साधना से जगाना है। राम युद्ध नहीं चाहते केवल शांत मनोदशा में बैठकर शक्ति का आत्मसंधान करते हैं। ऐसा बहुत से आलोचकों का मानना है। डॉ. निर्मला जैन का मानना है कि देश गाँधी के नेतृत्व में अहिंसा के रास्ते पर चलकर नैतिक बल से विदेशी शासन से मुक्ति पाना चाहता था। डॉ. निर्मला जैन के शब्दों में ''इस प्रकार तमाम अलौकिक चमत्कारों के रहते भी अपने प्रतीकार्थ में 'राम की शक्तिपूजा' नैतिक शक्ति की सिद्धि का काव्य है। इस नैतिक शक्ति की पूर्ण अर्थ–व्यंजना स्वाधीनता–संग्राम के उस संदर्भ में ग्रहण की जा सकती है जिसमें भारतीय जनता गाँधी के नेतृत्व में अंग्रेजी साम्राज्यवाद की विराट सैन्य–शक्ति के सम्मुख अपनी मुक्ति के लिए नैतिक बल का सम्बल लेकर अहिंसात्मक युद्ध कर रही थी।''[17]

उनका कहने का अभिप्राय यह है कि निराला के राम गाँधी की विचारधारा का अनुगमन कर रहे है इसीलिए वे युद्ध या अहिंसा का रास्ता छोड़कर शक्ति की नैतिक और मौलिक कल्पना करते हैं। दूसरी तरफ दूधनाथ सिंह यह मानते है कि निराला की शक्ति परिकल्पना की

16 निराला आमहत्या आस्था – दूधनाथ सिंह, पृ. 111.

17 कविता का प्रति संसार – डॉ. निर्मला जैन, पृ. 99.

अवधारणा गाँधीवाद के विरुद्ध है निराला स्वाधीनता संग्राम को भारतीय जनमानस को सैन्य–दृष्टि से सक्षम बनाना चाहते हैं। दूधनाथ सिंह के शब्दों में ''शक्ति की आराधना'' की धारणा ही गाँधीवादी सिद्धान्तों के विरुद्ध है। शक्ति की मौलिक परिकल्पना की बात भी अहिंसा की शक्ति परिकल्पना नहीं है – बल्कि कुछ ऐसी व्यूह–रचना, जो शत्रु को इस तरह मात दें सके, जिसकी उसे कल्पना भी न हो। यह सीधी–सादी सैनिक स्ट्रेटेजी की बात है। अपराजेय शक्ति को निःशंक अपनाने और धारण करने का संकेत है।''[18]

दूधनाथ सिंह के कथनों में अन्तर्विरोध है क्योंकि एक तरफ तो वे कहते है कि निराला सैन्यशक्ति को मजबूत करना चाहते है और दूसरी तरफ राम मर्यादित विजय चाहते हैं। युद्ध कभी मर्यादित हो सकता है। वे हनुमान को हिंसक और अराजकतावादी इसलिए मानते है कि वह गुफा में बैठकर शांत होकर पूजा नहीं करता अपितु अपने बाहुबल से शक्ति को परास्त करना चाहता है। यह राम, हनुमान और शक्ति का जो सारा मामला है उसे स्वाधीनता आन्दोलन के संदर्भ में ही समझा जा सकता है। आलोचकों ने वास्तविकता को छुपाने के लिए भ्रमजाल खड़ा कर दिया। वास्तविकता यह है कि 'राम की शक्ति पूजा' हिन्दी कविता यात्रा का वह महत्वपूर्ण पड़ाव है जहाँ आकर 'नायकत्व' की अवधारणा बदलती है। भारतीय सामाजिक और राजनैतिक ढाँचे में पहली बार क्षत्रिय धर्म हारता हुआ नजर आता है। अगर स्वाधीनता आंदोलन के संदर्भ में देखा जाए तो 'राम' उस शीर्ष नेतृत्व के अगुआ है जिसे अपनी व्यक्तिगत क्षमता पर संदेह है। यह वह अभिजात वर्ग है जो क्रांति का सेहरा तो अपने सिर बाँधना चाहता है लेकिन बलिदान देने से डरता है। जिसके पास शक्ति नहीं है। शक्ति के लिए बार–बार सामान्य जनता की तरफ देखता है। निराला के राम इसी वर्ग के प्रतीक है। निराला वर्णवादी व्यवस्था में

[18] वही निराला–आत्महन्था आस्था – दूधनाथ सिंह, पृ. 110.

विश्वास ही नहीं करते अपितु अपनी रचनाओं में उसे मजबूत ही करते हैं। शायद इसीलिए वे हनुमान जैसे आदिवासी लड़ाका को बीच में ही रोक देते है। सेवक या दास हो अपनी औकात में रहो। जहाँ तक शक्ति की बात है शक्ति हमेशा अन्यायी और अत्याचारी के पास ही रही है। शक्ति के केवल केन्द्र बदलते हैं उसकी संरचना नहीं बदलती। मध्यकाल में शक्ति सामन्तशाही के पास थी और औपनिवेशिक भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के पास। शक्ति को अन्याय के पक्ष से हटाकर न्याय के पक्ष में कैसे किया जाए यह निराला की मूल चिन्ता है। गुलाम भारत में आजादी एक प्रकार का यूटोपिया है। लेकिन यह सपना कैसे पूरा हो इसका मानचित्र या रणनीति समूचे छायावाद में किसी कवि के पास नहीं है। सभी कवियों के पास एक दार्शनिक समाधान या हल है। जिसे विजयदेव नारायण साही ने दार्शनिक मुद्रा कहा है। 'राम की शक्ति पूजा' का अंत भी एक प्रकार की नाटकीयता से होता है। शक्ति जादुई ढंग से राम के वदन में लीन हो जाती है –

''होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन।
कह महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन।।''

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. निराला का कालजयी व्यक्तित्व – सं. समय सिंह, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 1998.

2. निराला – डॉ. रामविलास शर्मा, शिवलाल अग्रवाल एंड कम्पनी, आगरा, सं. 1946.

3. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास – डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली, सं. 2009.

4. निराला – काव्य की छवियाँ – नंदकिशोर नवल, स्वराज प्रकाशन, रोहिणी, दिल्ली, सं. 2002.

5. राग–विराग – निराला – सं. डॉ. रामविलास शर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं. 2007.

6. निराला : आत्महन्था आस्था – दूधनाथ सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं. 2000.

7. भाषा, साहित्य और संस्कृति – सं. विमलेश कांति वर्मा, ओरियंट ब्लैकस्वॉन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, सं. 2000.

8. मिथक और आधुनिकता – शंभुनाथ सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली, सं. 1985.

9. कविता का प्रति संसार – डॉ. निर्मला जैन, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली, सं. 1994.